भूमिका

राम का पावन चरित भारतीय संस्कृति की संजीवनी होने के कारण विश्व का एक अत्यन्त लोकप्रिय आख्यान रहा है। साहित्यकारों ने समय–समय पर युग मानस को ऊर्जस्वित करने के लिए अपनी व्यक्तिगत साधना और अनुभूति के अनुसार उसे नये साँचे में ढालकर रूपायित किया। 'वाल्मीकि रामायण' और 'रामचरितमानस' रामकथा के दो ऐसे आधार स्तम्भ हैं, जिन्हें अपने प्रबन्धों का आधार बनाकर अनेक कवियों ने रामकथा को नवीन दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। ''रामचरित में कथा के धरातल पर नवीन दृष्टि मैथिलीशरण गुप्त के 'साकेत' से आरम्भ होती है लेकिन इसके सूत्रपात का समस्त श्रेय केवल गुप्त जी को नहीं है। हमें ऐसा समझना चाहिए कि गुप्त जी के काव्य में आकर रामकथा पर नवीन चिन्तन ने सर्वथा निखरा रूप धारण कर लिया लेकिन उसके सूत्रपात का श्रेय रामचरित उपाध्याय को है। उनके 'रामचरित–चिन्तामणि' का प्रकाशन संवत् 1970 के आसपास हुआ। 'रामचरित–चिन्तामणि' ने रामकाव्य की जो परम्परा चलायी उसमें पौराणिकता और नवीन दृष्टि दोनों का सम्बन्ध है। बल्कि यों कहना चाहिए कि पौराणिकता के अस्तित्व को स्थिर रखते हुए नवीन चिन्तन की रेखाएँ खींची गयी हैं। रामचरित उपाध्याय के प्रबन्ध काव्य 'रामचरित चिन्तामणि' की यह काव्य परम्परा अभी तक चलती आ रही है। इसलिए खड़ी बोली के युग के आरम्भ में पूर्वाग्रहगृहीत नवोन्मेषवाही रामकथा काव्यों की भी एक परम्परा है।

इसी परम्परा की एक कड़ी कवि रुद्र प्रताप सिंह द्वारा रचित ''सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य'' है।

'रामखण्ड रामायण' की अर्थ विविधता समुद्र की अटल गहराई का अवगाहन कराने वाली है। रामखण्ड रामायण अर्थ की गहनता, गम्भीरता और विविधता आज भी विद्वानों के चिन्तन का विषय है। कवि का व्यक्तित्व विरल

नहीं विकट था। उनकी अन्तःदृष्टि व्यापक और सार्वभौमिक थी, किन्तु उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी महानता विनम्रता की चरम परिणति है। कवि रुद्र प्रताप ज्ञान के निधान, गुणज्ञ, काव्यशास्त्र के निष्णात पण्डित तथा महाकाव्य के विधायक होते हुए भी अपने को विनम्रतापूर्वक अल्पज्ञ घोषित करने में उन्हें किंचितमात्र संकोच नहीं है।

'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' एक ऐसा सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है जिसका कथानक पौराणिक, जनाकर्षक है। महाकाव्य के नायक पुराण पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम है। कवि के राम ब्रह्म के अवतार हैं। वह ही सम्पूर्ण कथानक के केन्द्र बिन्दु हैं। कवि रूद्रप्रताप लेशमात्र भी लोक ख्याति के उपासक नहीं थे वह तो मात्र धर्म के ही साधक थे और उनका धर्म वैष्णव धर्म है। वैष्णव धर्म के प्रतिपादन के लिए कवि के पास एक ठोस आधार भी है– वह है राम कथा। चूँकि कवि राम–कथा का गुणगान करने में स्वयं प्रवृत्त है और राम वैष्णव धर्म के पूज्य स्वामी हैं, इसलिए उसे धर्म–प्रतिपादन में अत्यधिक सुविधा सुलभ हो जाती है और इसी साधना के कारण उन्हें परम विश्राम (सुख) की प्राप्ति हुई।

ब्रिटिश शासन में जब भारतीय राजा तथा अन्य राजसी घराने के लोग अपनी–अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने में लगे थे उस समय लगभग 4000 पृष्ठों एवं 9 पुस्तकाकार रूप में यह ग्रन्थ सन् 1911 में प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ बहुत दिनों तक माण्डा राजगृह में संभाल कर रखे गये होंगे, लेकिन अब अप्राप्य हैं। माण्डा राजगृह में यद्यपि आज इन प्रतियों का नामो–निशान तक शेष नहीं है तथापि क्षेत्र के कुछ पुराने लोगों के पास इनके होने की संभावनाएँ व्यक्त की जाती रही हैं। इसे प्राप्त करने के लिए मैंने कुछ लोगों से सम्पर्क बनाया लेकिन सफलता नहीं मिली। इस ग्रन्थ को लखनऊ विश्वविद्यालय के डा0 टी0एन0 सिंह से उपलब्ध कर मेरे द्वारा शोध कार्य किया गया है।

डॉ0 राम कुमार सिंह के निर्देशन में ''माण्डा रामायण में वर्णित ऐतिहासिक तथ्य'', डॉ0 अनुज प्रताप सिंह के निर्देशन में ''रामकाव्य परम्परा तथा सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड महाकाव्य'', प्रियंका रस्तोगी द्वारा ''सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य में रामकथेतर सन्दर्भ'' विषयों पर शोध कार्य किया गया है, किन्तु किसी भी शोधार्थी की दृष्टि धर्म और साधना के स्वरूप पर नही गयी है और न ही उपर्युक्त शोध ग्रन्थों में इस पर कोई प्रकाश डाला गया है; जबकि रामखण्ड रामायण में कवि का उद्देश्य ही है धर्म और साधना का निरूपण। क्योंकि धर्म और साधना का स्वरूप उन सभी विषयों का विवेचन तथा मूल्यांकन करता है जिनका मनुष्य के धार्मिक जीवन से सम्बन्ध है और जिन पर तर्कसंगत रूप से विचार किया जा सकता है।

मनुष्य की सभी अनुभूतियाँ, क्रियाएँ, मान्यताएँ, विश्वास, कर्मकाण्ड, संस्थाएँ तथा सिद्धान्त धर्म और साधना के स्वरूप के क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित मूल विषय है।

अब तक उपेक्षित होने के कारण ही ''सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य में धर्म और साधना का स्वरूप'' विषय को मैने चयनित किया है। यह विषय सर्वथा नवीन और मौलिक है।

अवधी में लिखित 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' धर्म और साधना के क्षेत्र में एक प्रामाणिक साक्ष्य है, जिससे धर्म और साधना के क्षेत्र को बल मिलता है। इस महाकाव्य में अनेक ऐसी धार्मिक कथाओं का उल्लेख है जो अन्य महाकाव्यों, पुराणों में नहीं मिलता है। अतः रामखण्ड रामायण महाकाव्य के धर्म और साधना के स्वरूप के अध्ययन से निश्चित रूप से कई नए तथ्य सामने आयेंगे।

'रामखण्ड रामायण' पर मेरा शोध कार्य करने का सबसे बड़ा कारण वैष्णव धर्म और उसकी साधना का प्रतिपादन है। मुझे लगा कि रामखण्ड

रामायण में धर्म प्रतिपादन और उसके साधना के स्वरूप को सुधी विद्वानों के समक्ष लाने का प्रयास व्यर्थ नहीं होगा। इस सम्बन्ध में मैंने डॉ0 गायत्री सिंह जी से निवेदन किया कि क्यों न उनके काव्य पर शोध करूँ? और उन्होंने अत्यंत प्रसन्नता के साथ अपनी सहमति प्रदान की। तत्पश्चात् राजा रुद्र प्रताप सिंह विरचित महाकाव्य 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य में धर्म और साधना का स्वरूप' विषय पर शोध कार्य अपनी पूर्णता पर पहुँचा।

अध्ययन की सुविधा हेतु यह शोध–प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभक्त किया गया है। जिसके अन्तर्गत प्रथम अध्याय के खण्ड (क) में 'धर्म और साधना का स्वरूप' का विवेचन किया गया है, जिसमें ब्रह्म के तात्त्विक स्वरूप, योग समन्वय, परम्परा और मौलिकता–दर्शन एवं भक्ति की दृष्टि से, पौराणिक परम्परा एवं महत्व–पुराण, इतिहास, भौगोलिक एवं खगोलीय दृष्टि से विवेचित किया गया है।

खण्ड (ख) में सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय के अन्तर्गत विशालकाय महाकाव्य, भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख कवि एवं साहित्यकार पं0 सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादन और प्रकाशन, विश्वप्रसिद्ध रामकथा पर आधारित काव्य, काव्य का नौ अध्यायों में विभाजन, कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से विलक्षण, प्रासंगिक एवं युगानुकूल कथा, एक हजार वर्षों का दस्तावेज इत्यादि का विवेचन इसी अध्याय में किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत कवि माण्डा नरेश रुद्र प्रताप का जीवन परिचय प्रस्तुत किया है, जिसमें वंश परिचय, राज्यकाल, रचनाकाल, ग्रन्थ प्रकाशन का समय, काव्य के माध्यम से धर्म और साधना के उपदेश का अध्ययन किया है।

तृतीय अध्याय में में रामखण्ड में वर्णित धर्म का स्वरूप, पौराणिक और अवतार कथाएँ, निर्गुण और सगुण विचार, ब्रह्म, जीव, जगत, माया और मोक्ष का स्वरूप तथा विभिन्न दार्शनिक विचारों की विवेचना प्रस्तुत की गयी है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत रामखण्ड में वर्णित साधना के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत किया है जिसके अन्तर्गत गुरुनिष्ठा, नाम साधना, योग साधना, ज्ञान साधना, भक्ति साधना, कर्म साधना की चर्चा की गयी है।

पंचम अध्याय में विभिन्न प्रकार की साधना पद्धतियाँ, कर्मकाण्डों और ज्योतिष आदि की विवेचना की गयी है, जिसमें सत्य नारायण व्रत कथा वर्णन, हनुमान मंत्र प्रयोग वर्णन, जानकी मंत्र प्रयोग, मानसिक पूजा प्रयोग, संध्या, समय का कर्म, अतिथि पूजन विधि, भोजन विधि तथा शयन विधि, वैश्य और शूद्रों का कर्म, गंगा महात्म्य, विभिन्न माह व्रत निर्णय, मलमास का विधान तथा एकादशी महात्म्य, रसायन वर्णन, रस वर्णन, रसभूयसी वर्णन की विवेचना की गयी है।

उपंसहार के अन्तर्गत महाकाव्य में वर्णित धर्म और साधना के स्वरूप का निष्कर्ष तथा मुख्य स्थापनाएँ तथा उपादेयता एवं भावी सम्भावनाएँ पर चर्चा की गयी है।

प्रस्तुत प्रबन्ध की सम्पूर्ति में जिन महान विभूतियों एवं अधिपतियों से प्रत्यक्ष या परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है, मैं उनका हार्दिक कृतज्ञ हूँ।

सर्वप्रथम शोध–प्रबन्ध की पूर्णता में शोध निर्देशिका डॉ0 (श्रीमती) गायत्री सिंह जी सदैव मेरी प्रेरणा स्रोत रहीं हैं तथा उनकी बहुमुखी प्रतिभा निरन्तर मेरा मार्गदर्शन करती रही। इस शोध प्रबन्ध की पूर्णता केवल एक दिवास्वप्न बनकर रह जाती, यदि आपका वरदहस्त न होता। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि शोध जैसा कार्य आपकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में इतना सहज हो सकता है। मेरे निरुत्साहित होने पर सदैव धीरज बँधाया और अपना बहुमूल्य

समय देकर 'शोध–प्रबन्ध' को स्नेहपूर्ण संरक्षण में पूरा कराया। इस अहेतुक कृपा के लिए मैं चिर ऋणी रहूँगा।

मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो0 डॉ0 टी0एन0 सिंह जो रामकथा के अधिकारी विद्वान हैं, उनकी आज्ञानुसार ही इस विषय को चुना और इस पर कार्य करना आरम्भ कर दिया। डॉ0 टी0एन0 सिंह का आशीर्वाद एवं बहुमूल्य परामर्श सदैव मिलता रहा। मैं डॉ0 टी0एन0 सिंह के प्रति श्रद्धावनत् हूँ।

मैं आचार्य नरेन्द्र देव महिला महाविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश की पूर्व प्राचार्य डॉ0 विजय लक्ष्मी त्रिवेदी एवं हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्षा डॉ0 सरोजिनी पाण्डे के प्रति सर्वाधिक कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने व्यस्तता के बाद भी अनेक गम्भीर विषयों के विवेचन में समुचित परामर्श दिया।

मैं श्री महेन्द्र कुमार पाण्डेय, उप प्रधानाचार्य, ज्ञान भारती इण्टर कालेज, कानपुर, डॉ0 अतुल कुमार सिंह, शोध सहायक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, श्री बद्री नारायण तिवारी, संयोजक, मानस संगम कानपुर के प्रति भी आभार ज्ञापित करना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

मैं आर्मापुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कानपुर उत्तर प्रदेश के प्राचार्य डॉ0 जी0एल0 श्रीवास्तव के प्रति हार्दिक कृतज्ञ हूँ।

मैं अपने पिताश्री के एवं माताजी के चरणों में सादर अभिवादन करता हूँ, जिन्होंने मुझे शिक्षा जगत् के सर्वोच्च सोपानों का संस्पर्श करने हेतु प्रोत्साहित किया और उनके आशीर्वाद सतत् मार्ग प्रशस्त करते रहे। मेरे अनुज श्री निरंजन अवस्थी जिन्होंने मेरे जीवन में एक मित्र की भूमिका निभायी है, उन्होंने सतत् मेरे अन्तर्मनस में सुषुप्त व्यक्ति को, जागृत करने का कार्य किया। उनके प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करना औपचारिकता ही होगी। प्रस्तुत कार्य की सुसम्पन्नता में मेरी अनुज वधू डॉ0 अर्चना अवस्थी, प्रवक्ता, डी0जी0 पी0जी0

कालेज, कानपुर के प्रति भी कृतज्ञ हूँ। उत्साहवर्धन हेतु अपने बड़े भ्राता समान श्री अशोक दुबे जी, प्रवक्ता, विद्युत परिषद इण्टर कालेज, कानपुर के प्रति आभार व्यक्त करना मात्र औपचारिकता ही होगी। जिन्होंने शोध कार्य के प्रारम्भ से अद्यतन सहयोग किया। मैं हृदय से नतमस्तक हूँ।

और, अन्त में मैं आभार व्यक्त करता हूँ अपनी जीवन सहचरी श्रीमती रेखा अवस्थी के प्रति, जिन्होंने प्रत्येक पल मुझे सम्बल प्रदान किया, जिनकी इच्छा शक्ति के परिणामस्वरूप ही आज यह शोध प्रबंध पूर्णता की स्थिति में आ सका। मैं आभार व्यक्त करता हूँ मेरे दोनों पुत्र अंश एवं अस्तित्व का जिन्होंने मुझे शोध कार्य के दौरान जीवन के नाना झंझावातों से मुक्त कर लेखन हेतु समय और ऊर्जा प्रदान की तथा प्रसन्नचित्त बनाये रखा।

मैं उन सभी गुरुजनों, मनीषियों, सुधीजनों एवं विद्वानों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष में विभिन्न आध्यात्मिक–धार्मिक, भावों–विचारों, परामर्श से जाने–अनजाने सहयोग प्राप्त हुआ।

यह शोध–प्रबन्ध अब परीक्षण–मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत है। मैं अपने प्रयासों में कहाँ तक सफल हूँ, सुधी विद्वज्जन ही निर्णय करेंगे।

दिनांक–

¼inhi voLFkh½